ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS: षिक्षक, विद्यार्थी, राष्ट्र एवं समाज

''शिक्षक एक राष्ट्र निर्माता के रूप में''

श्रीमती संतोश (शोधार्थी) षिक्षा संकाय, टांटिया विष्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)

श्री रजनीश कुमार स्वामी (व्याख्याता) संस्कार इंटरनेषनल महिला षिक्षक षिक्षा महाविद्यालय, हनुमानगढ़ जंक्षन (राज.)

ABSTRACT

षिक्षक की प्रेरणा से सम्पूर्ण समाज राष्ट्रोत्थान के मार्ग पर अग्रसर होता है। वे राष्ट्र कभी उन्नति नहीं कर सकें जिन्होंने षिक्षकों का सम्मान नहीं किया। भारत षिक्षकों के बल पर ही विष्वगुरू बना क्योंकि भारतीय समाज ने आदिकाल से ही षिक्षक को अपना गुरू, पथप्रदर्षक और जीवन रूपी नैया का खेवनहार माना है। धार्मिक आयोजन गुरू की शरण में ही पूर्ण करना चाहता है। अतः षिक्षक और गुरू के बिना भारतीय समाज अधूरा है।

भारतीय समाज एवं साहित्य में षिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा गया है क्योंकि वह स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाष देता है। षिक्षक समाज को असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाष की ओर तथा मृत्यु से अमरता की ओर प्रस्थान करने का र्मा बताता है। षिक्षक समाज–संरचना और राष्ट्र–निर्माण में स्वयं को मिटा देता है।

षिक्षक की प्रेरणा से सम्पूर्ण समाज राष्ट्रोत्थान के मार्ग पर अग्रसर होता है। वे राष्ट्र कभी उन्नति नहीं कर सकें जिन्होंने षिक्षकों का सम्मान नहीं किया।

भारत षिक्षकों के बल पर ही विष्वगुरू बना क्योंकि भारतीय समाज ने आदिकाल से ही षिक्षक को अपना गुरू, पथप्रदर्षक और जीवन रूपी नैया का खेवनहार माना है। धार्मिक आयोजन गुरू की शरण में ही पूर्ण करना चाहता है। अतः षिक्षक और गुरू के बिना भारतीय समाज अधूरा है। भारतीय वाङ्मय में षिक्षक–गुरू की महिमा निम्न श्लोक से प्रकट है–

गुरूब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वर।
गुरूर्साक्षात् परं ब्रळ्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
ध्यानमूलं गुरूमूर्तिः पूजामूलं गुरूर्पदं।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्य मोक्षमूलं गुरूर्कृपा।।
गुरू गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।।

षिक्षक का सम्मान व गौरव तब होता है, ज बवह अपने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय जीपन मूल्यों व सामाजिक परम्पराओं के निर्वहन की षिक्षा देता है, जिससे वह राष्ट्र गौरवषाली बनता है। षिक्षक की सफलता इसी में है कि वह विद्यार्थियों–व्यक्तियों में राष्ट्रचरित्र का निर्माण करे। राष्ट्रीयता से शून्य व्यक्ति राष्ट्र को पतन के मार्ग पर ढकेलते हैं और राष्ट्र के पराभाव का कारण स्वयं बनते हैं।

भारतीय इतिहास क्षासी है कि राष्ट्रीय–चरित्र के अभाव में भारत को कई बार अपमानित होना पड़ा है – चाहे मध्ययुगीन आक्रमण हो, ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन हो या स्वातन्त्रोत्तर आधुनिक भारत की विविध क्षेत्रीय, धार्मिक, भाशायी, सामाजिक, साम्प्रदायिक, आर्थिक समस्याएँ हों। हम शस्त्र और शास्त्र से परिपूर्ण होते हुए भी वैयक्तिक स्वार्थ के कारण विदेषियों से हार गये क्योंकि तात्कालीन षिक्षक अपने समकालीन समाज को राष्ट्रीयता से परिपूर्ण एवं ओत–प्रोत नहीं कर पाए।

आज आवश्यकता है कि मन्दिरों, मस्जिदों, गुरूद्वारों, गिरिजाघरों और सभी के साधना–आराधना–पूजागृहों में ईष वन्दना के साथ–साथ राष्ट्र–वन्दना के स्वर भारत के दिग्–दिगन्तर तक गुजायमान हों। भारतभूमि के हर क्षेत्र और भाशा से माँ भारती का जयघोश हो। भारत के पूजा–गृहों व इबादतगाहों से भारत माता का जयगान हो। यदि हमने अपने–अपने धर्म–मजहब और सम्प्रदाय की उपासना के साथ–साथ राष्ट्र–आराधना नहीं की तो हमारे उपासना मार्ग भी संघर्शमय हो जाएँगे।

समय आ गया है कि हम भारत के प्रत्येक नागरिक से नागरिक का, व्यक्ति से समाज का और समाज से राष्ट्र का तादात्म्य और एकता स्थापित करें। षिक्षक को राष्ट्रीयता के माध्यम से समाज व राष्ट्र को एकता–अखण्डता के सूत्र में बाँधना होगा।

राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए कई बार अपनों से भी संघर्श करना पड़ता है तथा सत्ता और शासन का विरोध भी झेलना पड़ता है। अक्सर राष्ट्रविरोधी तत्व जयचंद और मीर जाफर बन कर देषभक्तों को दिग्भ्रमित करने का प्रयास करते हैं। ऐसे देषद्रोहियों व राष्ट्रघातियों का मुकाबला षिक्षक स्वयं के बुद्धि, बल और सामर्थ्य से करें।

षिक्षक राष्ट्र के नव निर्माण में स्वयं को अग्रसर करें और राष्ट्रोत्थान के मार्ग में आने वाली बाधाओं को शास्त्र व जन–सहयोग से दूर करें। षिक्षक का शक्ति शास्त्र और समाज है। राष्ट्रोन्नति के मार्ग में बाधक कंटकों को षिक्षक जन–षक्ति के सहयोग से परास्त करें और राष्ट्र विरोधियों को अपनी शक्ति व सामर्थ्य का परिचय दें। सामर्थ्यहीन षिक्षक अपने शास्त्र और समाज की रक्षा–संरचना नहीं कर सकता है। राष्ट्र तथा समाज में व्याप्त कायरता और क्लीवता को समाप्त करने का दायित्व षिक्षक का है।

षिक्षक विराट् और विषाल राष्ट्र–हितों के सम्मुख तुच्छ व्यक्तिगत–पारिवारिक–जातिगत स्वार्थों का परित्याग करें। षिक्षक सत्ता की राजनीति से कदापि समझौता नहीं करें। षिक्षक के लिए परिवार, जाति, वर्ग और समाज से बढ़कर राष्ट्र होना चाहिए। ''राष्ट्र सर्वोपरि'' षिक्षक का मूलमंत्र होना चाहिए।

षिक्षक सत्ता और शासन का पिछलग्गू बन कर राजनीति का भोंपू न बने। षिक्षक अपनी निःस्वार्थ भावना और सामर्थ्य से शासन का मार्ग्दर्षन करे और मषाल बन कर सत्ता के आगे चलें। भारत का इतिहास बताता है कि शासन व स्वार्थ की राजनीति ने हमेषा भारतवर्श का अहित किया है और भी सत्ता की चाह में अधिकतर राजनीतिक दलों और स्वयंभू नेताओं द्वारा राष्ट्र हितों की बलि दी जा रही है।

लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में अधिकाधिक मत प्राप्त करके ही शासन व सत्ता प्राप्त की जा सकती है किन्तु सत्ता प्राप्ति के लिए वोट बैंक की राजनीति, मजहबों का तुष्टीकरण, जातिवाद का जहर, वर्ग विषेश की कामना, अपराधियों से गठजोड़, अल्पसंख्यकवाद से अलगाववाद को हवा देना, मानवाधिकारों के नाम पर देशद्रोहियों बचाना तथा राष्ट्र विराधियों के वितण्डावाद भारतवर्श जैसे विषाल–विराट् राष्ट्र के लिए शुभ सकेंत नहीं है।

षिक्षक केवल राष्ट्र–आराधना करें, राष्ट्र साधना करें और राष्ट्र का मनन करें। वह विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत कर उनमें राष्ट्रीयता का ज्वार पैदा करे। एक बार भारत मं यदि देषभक्त नागरिकों की पूरी पीढ़ी तैयार हो जाती है तो मुझे पूर्ण विष्वास है कि फिर भारत में आतंकवाद, अलगावाद, भाशावाद, क्षेत्रवाद, वर्गवाद, जातिवाद, धार्मिक कट्टरता, मजहबी संकीर्णता, भ्रष्टाचार, महंगाई, नक्सलवाद, साम्प्रदायिकता, दंगा–फसाद जैसी राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जाएँगी और भारत विश्वगुरू बन जाएगा।

षिक्षक द्वारा विद्यालयों में राष्ट्रभक्त नागरिकों के निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ कर देने पर दुनिया के शक्तिषाली राष्ट्र तो क्या भगवान् भी भारत की उन्नति को रोक नहीं सकेंगे। देषभक्त नागरिक अवष्य ही भारत को समृद्धिषाली व वैभवषाली बनाएंगे।

षिक्षक अपने पूर्वजों और भारतवर्श की गुरू–परम्परा का स्मरण करके स्वयं की निराषा और हीनता को समाप्त करे। भारत के चक्रवर्ती सम्राटों, रियासती राजाओं और देवताओं के गुरू बृहस्पति, असुरों के गुरू शुक्राचार्य, राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न के गुरू वषिश्ठ, श्रीकृष्ण के गुरू सांदीपनि, कौरवों–पाण्डवों के गुरू द्रोणाचार्य–कृपाचार्य, विष्वामित्र,परषुराम, चन्द्रगुप्त के गुरू चाणक्य, छत्रपति षिवाजी के गुरू समर्थ रामदास, महात्मा गाँधी के गुरू गोपाल कृष्ण गोखले, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के श्री गुरूजी आदि कई पौराणिक, एतिहासिक और आधुनिक गुरूओं का स्मरण करते हुए अपने सामाजिक–राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों का निडर होकर पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वाह करें और राष्ट्र को उन्नति के पथ पर अग्रसर करें।

षिक्षक रामदूत हनुमान की भाँति अपनी सुशुप्त शक्तियों का स्मरण कर उन्हें जाग्रत करें और राष्ट्र का नव निमार्ण करें। प्रलय और सर्जन षिक्षक के ही हाथों में है। षिक्षक अपनी भौहों के इषारे मात्र से समाज को चलायमान और दोलायमान कर सकता है। षिक्षक ने सत्ताओं को स्थापित भी किया है और निरंकुष बन चुकी सत्ताओं–षासन व्यवस्थाओं को उखाड़ भी फेंका है। षिक्षक जब चाहे एक नई सृष्टि एवं समाज का निर्माण कर सकता है।

समग्रतः कहा जाता है कि षिक्षक भारत की भावी पीढ़ी अर्थात् आज के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण प्रारम्भ कर उनमें राष्ट्रीय–सांस्कृतिक मूल्यों का समावेष कर दे तो भविष्य में भारत की विजय सुनिष्चित है। षिक्षक को भारत की एकता–अखण्डता का ''अष्वमेध'' अपने विद्यालय में ही करना होगा। विद्यार्थी और षिक्षक मिल कर एक स्वर में माँ भारती की जय–जयकार, वन्दे मातरम और तय हिन्द का उद्घोश करके ही भारत को विश्व गुरू बनने के पथ पर अग्रसर करेंगे–

माँ भारती! तुझे नमन।
खिलता रहे तेरा चमन।।

राजा रन्तिदेव की भाँति मेरी एक ही अभिलाशा है– मुझे ना राज्य चाहिए, ना स्वर्ग, न पुनर्जन्म। मैं तो केवल दुःखी व्यक्तियों की पीड़ा का शमन करना चाहता हूँ।

जय भारत **जय हिन्द**